आचार्य रविचन्द्र

जीवन-परिचय : आचार्य रविचन्द्र अपने को मुनीन्द्र कहते हैं। उनका निवासस्थान कर्नाटक प्रान्त के अन्तर्गत 'पनसोज' नाम का स्थान है। कर्नाटक के शिलालेखों में रविचन्द्र का नाम कई स्थानों पर आया है। आचार्य रविचन्द्र को जैन आगम का पाण्डित्य प्राप्त था।

रविचन्द्र का समय ई. सन् की 12वीं शताब्दी का अन्तिम पाद या 13वीं शती का प्रथम पाद (चरण) माना जाता है।

रचना-परिचय : आचार्य रविचन्द्र की एकमात्र रचना 'आराधना-सार-समुच्चय' है।

आराधना-सार-समुच्चय : रविचन्द्र का आराधना-सार-समुच्चय संस्कृत में लिखा गया महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र और सम्यक्तप—इन चारों आराधनाओं का वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ में 252 श्लोक हैं। इस ग्रन्थ का सम्पादन-अनुवाद डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन ने किया है और प्रकाशन सोमैया संस्थान, विद्याविहार, मुम्बई से हुआ है।